International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.065
Vol.8 No.1 Sept – Oct 2020

आधुनिक धूमिल : डॉ. बलभीमराज गोरे

प्रा. डॉ. भारत वा. उपाध्य
वारणा महाविद्यालय, ऐतवडे खुर्द.
ता.वाळवा जि.सांगली. भ्रम. - ९९२१८०८२८६

डॉ. बलभीमराज गोरे यह आधुनिकता के मानो धूमिल हैं। सुप्रसिद्ध कवि धूमिल के काव्य संग्रह संसद से सड़क तक कि कविताओं का प्रभाव गोरेजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पड़ा नजर आता है जिसका प्रयोग उन्होने वर्तमान कविता संग्रह विदास में किया है। कवि डॉ. बलभीमराज गोरे जी का जीवन परिचय को हम जब पढ लेते है तो उनकी जीवनी को हम फली फांति समझ लेते हैं। कवि गोरे जी एक स्कुल के अध्यापक के रूप में लगभग छह वर्ष तक आपनी सेवा दे चुके हैं. एक स्कूली अध्यापक से शुरू की गयी यात्रा एक मराठवाडा शिक्षण प्रसारक मंडल के शिवछत्रपति महाविद्यालय, सिडको एन- ३, औरंगाबाद के प्रधानाचार्य के पद तक लंबी यात्रा सफलता पूर्वक की हैं, यही उनकी कार्य की और कड़ी मेहनत की मानो रसीद ही है। उनकी लेखन की रुची और समाज के प्रति आत्मीयता होने के कारण साहित्य का केन्द्रीय विषय आम आदमी, शोषित कृषक एंव मजदूर वर्ग रहा है। उन पर हो रहे आत्याचार और दयनीय अवस्था को मानो आपने साहित्य विषय में केन्द्रीय स्थान दे दीवा हैं।कवि बलभीमराज गोरे एक पंखे के निछे बैठकर कल्पनाओं में और प्रकृति मे रम्मान होने वाले कवि न होकर आम वर्ग के सुख दुखो पर लिखने वाले यथार्थवादी कवि के रूप हिंदी साहित्य जगत में सूविख्यात हुए हैं। अभाषि हिंदी क्षेत्र के अन्य गिने चुने साहित्यकारों में उनका स्थान सर्वोच्छ उच्छपद्स्य पद पर विराजमान हो गया है। उन्होने हिंदी साहित्य के लिए दिया योगदान काफी विपूल मात्रा में है यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आपने जीवन काल में जो साहित्य संपदा लिखि है वो आने वाले छात्रों के लिए एंव साहित्य जगत के लिए प्रेरणास्त्रोत एव मददगार संदर्भ ग्रंथ के रूप में साबित हुई है।

आज तक उन्होंने लगभग मौलीक अनुदित, संपादित ग्रंथों की संख्या ४२ से ज्यादा लिखी हैं उनकी कविता एवं साहित्य लेखन विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पढाया जाता है आज भी उनके कही ग्रंथ संदर्भ ग्रंथों के रूप में हिंदी साहित्य जगत में अपना स्थान पा रहे हैं। ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी कवि गोरेजी साहित्य के सभी विधाओं पर समान अधिकार पा रखने वाले लेखक के रूप से जाने जाते है। उन्होंने गद्य विधा में जितना लिखा है उसे कही ज्यादा पद्य विधा में यहाँ उनका वर्तमान में लिखा बिदास काव्य संग्रह को जब हम पढ़ते हैं तो एक आम वर्ग की त्रासदी एंव उनकी मूक पाणी की करुण कहानी सपष्ट हो जाती है साथ ही एक शब्द चित्र पाठकों के सामने खड़ा हो जाता है। विदास काव्य संग्रह में समाज में प्रचलित सभी समस्याओं पर बेबाक लेखनी चलायी है इसलिए यह कहा जाता है कि गोरे जी का साहित्य पंत साहित्य न होकर संत और संत साहित्य का चित्ररूप बन गया हैं। उसी काव्य संग्रह की एक कविता भूखके मारे में कवि ने एक आम जीवन की त्रासदी एंव अभाव ग्रस्त जीवन का करुण दृश्यमय चित्र अंकित किया है.

जरा सी बात के लिए परसों
राशन की एक दुकान पर सहसा,
जिन दो चार लोगों के बीच तहलका मचा था.
झुक झुक हुई थी और शहर में
उन्हीं में से एक. सुना है, कल सरकारी अस्पताल में
मर गया है।१

एक आम वर्ग का पात्र अपने जीवन जीते जीते मर जाता है लेकिन उसकी गिनती नहीं होती। यहाँ प्रवाहा के बाहर और हमेशा हाशिये के छूटे पक्ष के प्रतिनिधि की करुण कहानी और दर्दभरा चित्रण कवि ने शब्द किया है। अर्थात कवि गोरे जी ने एक आम वर्ग के प्रतिनिधि पात्र को कविता का विषय बनाकर उसके संघर्ष और यातनामय जीवन का पाणी देने का काम काफी अच्छे दृष्टि से किया है। मनुष्य को अपना जीवन जीने के लिए आवश्यक रोजी-रोटी चाहिए उसे प्राप्त करने के लिए जीवन ने कई बार संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे ही राशन दुकान पर हुये संघर्ष को यहाँ अभिव्यक्ति

किया है । जिससे एक आम आदमी की जान भी गयी है। प्रस्तुत काव्य संग्रह बिदास में एक सर्वहारा वर्ग के जीवन संघर्ष को कवि ने शब्द बध्द किया है। जीवन में जीते समय मनुष्य अपनी मुख्य आवश्यकता रोटी कपडा और मकान को प्राप्त करते समय कई प्रकार से यातना और समस्याओं से गुजरता है यहाँ तक उसका अंत भी होता है लेकिन उसकी बुनियादी पूर्ति की माँग पूरी नहीं करता। उसकी भौतिक सुविधा तो कोसों दूर होती है। इस आम वर्ग की पीड़ा और वेदना का चित्रण कवि गोरे जी अपनी कविताओं में अभिव्यक्त करने में कुशल हुए है।

कवि गोरे जी अपने पुगिन परिस्थितियों की त्रासदी से परेशान है यह यह सोचते हैं. कि. जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिए। आदमी क्यों जीता है जीवन का मकसद आदर्श समाज निर्मान करना होना चाहिए लेकिन किसी को यह खबर नहीं है कि जीवन में आये हो तो समाज हित के लिए जीना चाहिए और एक आदर्श जीवनमूल्य को पूर्नस्थापित करना जीवन का मूल उद्देश्य होना चाहिए लेकिन इससे कोसो दूर आज का समाज जी रहा है मानो यही इस समाज की युगिन त्रासदी है कवि के शब्दों में.....

कोई नहीं जानता कि यह
किस बात के लिए जिंदा है,
सत्यों आदशों या जीवनमूल्यों के लिए जिंदा है,
यही इस युग की सब से बड़ी त्रासदी है |२

उनकी एक और कविता कुत्ते कुत्ते ही होते हैं में स्वाभिमान और इमानदारी से काफी दूर रहा. आदमी का चित्रण कवि ने शब्दबद्ध किया है। मानव ने बदलना चाहिए लेकिन कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो बदलते नहीं कुत्ते की पूँछ तरह टेढी ही रह जाते हैं। यहाँ प्रतिकात्कता शैली के माध्यम से समझाने का प्रयास कवि ने किया गया है। कवि कहते हैं लाख कोशिश करे कुछ आदमी मूल प्रकृति के अनुरूप ही जीते हैं उसमे कोई कोई परिवर्तन नहीं आता – जैसे-

कुत्ते कुत्ते ही होते हैं,
जिनकी कृति आखिर उनकी अपनी
प्रकृति के अनुरूप ही होती हैं । ३

वरिष्ठ कवि डॉ बलभीमराज गोरे जी ने मनुष्य के स्वभाव को कुत्ते की पूँछ की उपमा देकर उनके स्वभावगत विशेषताओं को रेखांकित करने का प्रयास किया गया हैं समाज में ऐसी भी व्यवस्था हैं। जो केवल दूसरों को उपयोग प्रयोग में लाती है। जिसप्रकार कुत्ता जरा सी जूठन, और हड्डी के लिए पूरी इमानदारी से काम करता है वह अपना स्वाभीमान भूल जाकर मालिक के सामने पेश आता हैं। बस उसीप्रकार समाज में लोग है जो थोड़ी सी लालच के कारण अपना स्वाभिमान छोड़कर दूसरों की रखवाली करते हैं। इस जनसेवा के संदर्भ में भी कवि ने अपनी आवाज बुलंद कर दी हैं -

तुम्हारी जनसेवा
निहायत निच्छल करुणा की मूर्ति,
गोमाता की तरह मुझे
बेशक मंजूर है पर उसके
गले में अटकी जेवरी इस वक्त उस
कसाई की मुट्ठी में बंद है
कि जिस से,
खरियत की उम्मीद तक
बेकार है |15

भारतीय संस्कृति में गोमाता का स्थान काफी आदर का रहा हैं। गाय मनुष्य को दूध देती। है यहाँ तक किसानों को बैल भी देती हैं। यहाँ भारतीय कृषक परिवार में गाय का अन्यन्य महत्व रहा है । किंतु वह करुणा की मूर्ति होने के बावजूद भी कसाई की मुद्दी में बंद है जिससे खैरियत की उम्मीद करना भी एक अनुचित हैं । यहाँ कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि इस भूमि में हर किसी का कोई भक्ष्य है लेकिन यहाँ थोडासा चितन करने की भी आवश्यकता है कि मनुष्य ने इस कुव्यवहार से हमेशा दूर ही रहना चाहिए जो सबके लिए अमानवीय है, यहाँ आम वर्ग भी केवल गोमाता की तरह काम में लाया जानेवाला प्राणी है ऐसी सोच करके उसका उपयोग तथा प्रयोग कर उसे दबोज दिया जाता है या उसे प्रसंगानूरय समाप्त किया जाता है।

प्रस्तुत काव्य संग्रह बिंदास में कवि ने विविध पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है। जैसे उपस्थिति अनुपस्थिति बोध, सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक मजबूरी सत्ताधारी और विरोधी पक्ष सरकार का वास्तविक मुखवटा,

आरजकता, विभिन्नता, अलगाव, शीयंता, एकता, राजनीतिक षडयन्त्र, राष्ट्र प्रेम, आम आदमी का चित्रण, बेरोजगारी की व्यथा, स्वाभिमान तथा आत्मयिता, भ्रष्टाचार,आत्मकथन, मनुष्य का उद्देश्य एवं संस्कृति एंव विकृति आदि प्रकार की विशेषताएँ उनके काव्य संग्रहों में देखी जा सकती हैं। कवि गोरे जी की एक और कविता पाँच साल बाद का कुछ अंश यहाँ दृष्टव्य है।

हर पाँच साल बाद
या फिर जब कभी चुनाव होता है।सरकार बदलती है।
और लोग नाचते.
खुशियाँ मनाते हैं। ये नहीं जानते
कि मालिक के बदल जाने की खुशियों
उन गधों के लिए बेकार हैं
किन फिरत में सिर्फ बोझ ढोना लिखा है ६

प्रसिद्ध कवि धूमिल का संसद से सड़क तक काव्य संग्रह की कविताओं के लक्षण और कवि गोरेजी के काव्य का स्वरूप कहीं हद तक एक ही लगता है। कवि धूमिल की कविता बीस साल बात का प्रभाव गोरे जी के पाच साल बाद कविता पर पड़ा नजर आता है। इसके अलावा प्रसिद्ध कवि गजानन माधव मुक्तिबोध के विचारों का भी प्रभाव कवि गोरे जी पर पड़ा नजर अता है यह स्वभाविक है कि गजानन माधव मुक्तिबोध, मराठी भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार कवि गोरे जी को कुछ साल पहले प्राप्त हुआ है इसका यह भी कारण हो सकता है धूमिल और मुक्तिबोध के साहित्यक विचारधारा का बुनयादी प्रभाव उनके सभी साहित्य पर है। एक अहिंदी भाषी प्रदेश से नाता रखने वाले गोरे जी बस इसी तरह निरंतर साहित्य लेखन कर रहे जीसकी बिंदास यह कृति मनुष्य को मनुष्य बनने का संदेश देती है । साथही नेकी पर चलने के लिए सब को बाध्य भी करती है हमारा भविष्य हमारे हाथ मे होता है। उसे अच्छे कर्मों के लिए कुर्बान करना चाहिए। देश की भ्रष्टचार व्यवस्था को दूर कर एक सुंदर भारत सुसंपन्न भारत बनना हर भारतीयों के हाथ में हैं कवि के शब्दों में.....

नेकी और उजाले की तरह
बेनेकी और अँधेरे के बीच
चोली दामन का साथ है, फिर भी
हम कहते हैं हमारा भविष्य हमारे हाथ है। ७

अतः किसी भी दृष्टिसे उनके साहित्य एंव काव्य संग्रह बिंदास को पढने से यह पता चलता है कवि गोरे आधुनिक भूमिल हैं। जिसप्रकार उनके पूर्वज एंव माता- पिता कृषक परिवार से संबंध रखते हे बस उसका असर कवि के मन पर गहरा हुआ नजर आता है उनकी करुण कहानी का बखान अपनी कविता में अभिव्यक्त करने में सिद्धहस्त हुए यह उनका लेखन किसी एक व्यक्ति का न होकर सब कृषक, दीन-दलित एंव सर्वहरा समाज का आईना बन पड़ा है।

वरिष्ठ लेखक एवं कवि डॉ. बलभीमराज गोरे जी का काव्य संग्रह विदास यह उपस्थिति एंव अनुपस्थिति का बाँध करने काव्य संग्रह रहा है। इसपर काफी धूमिल का प्रभाव परलक्षित होता है । इसे यह भी कहा जाता है कि धूमिल की कविता बीस साल बाद, जनतंत्र के सूर्योदय में, मकान, कुत्ता, सच्ची बात, अकाल दर्शन आदि कविताओं का प्रभाव उनकी कविताओंपर पड़ा नजर आता है।

संदर्भ सूचिः

विदास - डॉ. बलभीमराज गोरे पृ.सं.३८
बिदास- डॉ. बलभीमराज गोरे पृ.सं. १६
बिदास - डॉ. बलभीमराज गोरे पृ.सं.११.
बिदास डॉ. बलभीमराज गोरे पृ.सं. १०
विदास - डॉ. बलभीमराज गोरे पृ.सं. ५२.
विदास - डॉ. बलभीमराज गोरे पृ.सं.३३